शहर की मुर्गी

लेखक : आर्थर

चित्रण : हेनरी

शहर की मुर्गी

हिंदी : दीपक थानवी

हेनरी एक मुर्गी थी। उसका पूरा नाम तो हेनरीटा था। सब उसे प्यार से हेनरी बोलते थे। वह शहर में रहती थी जहाँ उसका मुर्गीघर अलेक्स के घर के पीछे था।

अलेक्स रोज़ हेनरी से मिलने जाता था। वह हेनरी की देखभाल करता था और उसके अंडे इकट्ठे करता था। हेनरी के सारे अंडे नीले रंग के होते थे।

"यह तो गजब है," अलेक्स बोला।

"यह तो अजीब है," लूसी बोली। लूसी का घर हेनरी के घर के पास ही था।

वह बोली, "तुम कैसी मुर्गी हो जो इधर-उधर अंडे दे रही हो ?"

हेनरी ने कहा, "मैं यहाँ रहती हूँ। मुर्गियाँ तो अंडे देती ही हैं। और मेरे अंडे नीले रंग के हैं।"

"तुम तो गुस्सा हो रही हो," लूसी बोली।

"मुर्गियाँ तो गुस्सा होती ही हैं," हेनरी कुड़कुड़ाती हुई बोली।

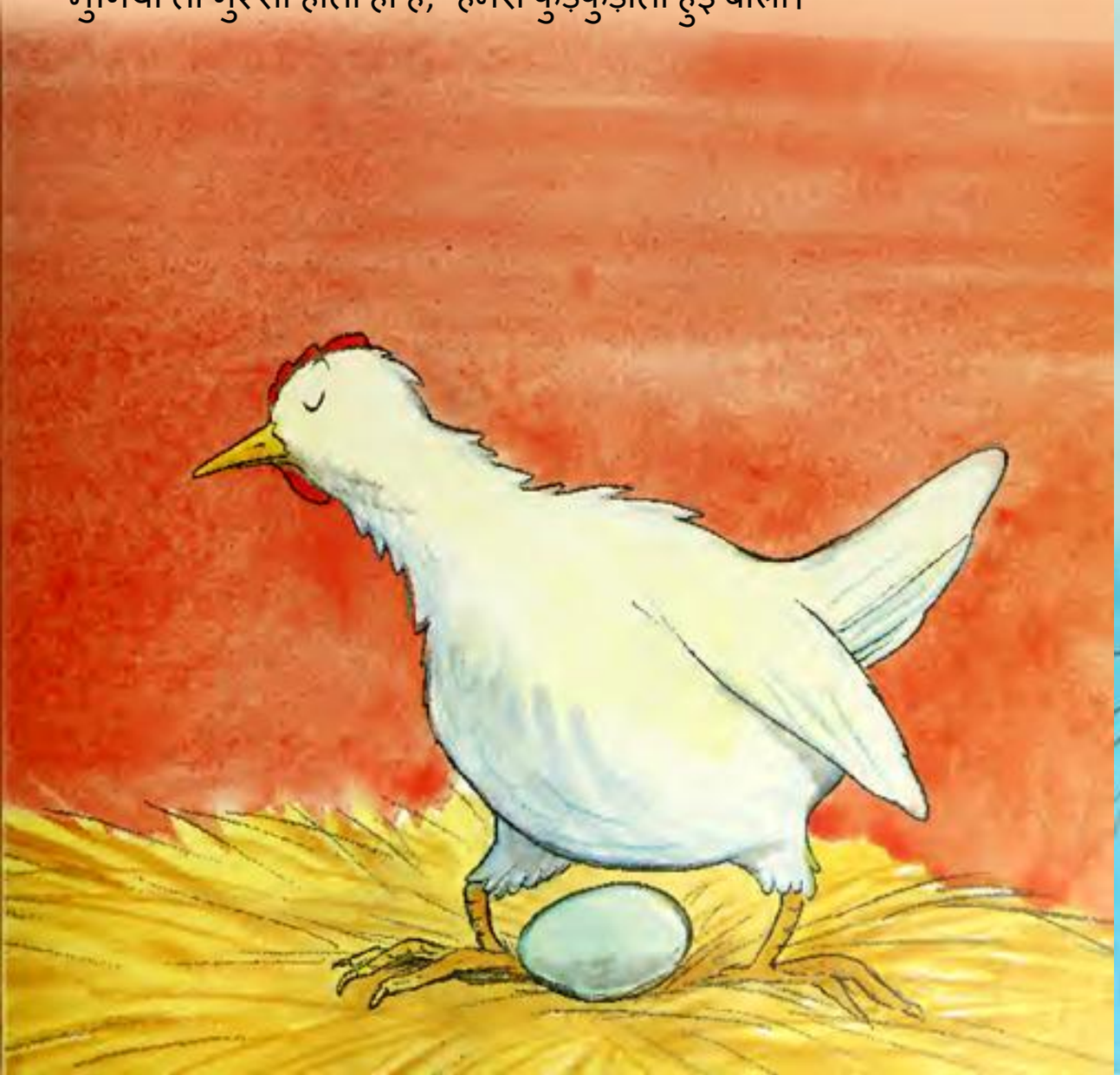

"ठीक है," लूसी बोली।

"लेकिन मुर्गियाँ तो गांव में रहती हैं, जहाँ शांति होती है, और वहाँ गायें और.."

"गाय क्या होती है ?" हेनरी ने पूछा।

"गायें गांव में रहती हैं। वे घास खाती हैं, फिर दूध देती हैं। तुम्हें यह सब गांव में जाकर देखना चाहिए।"

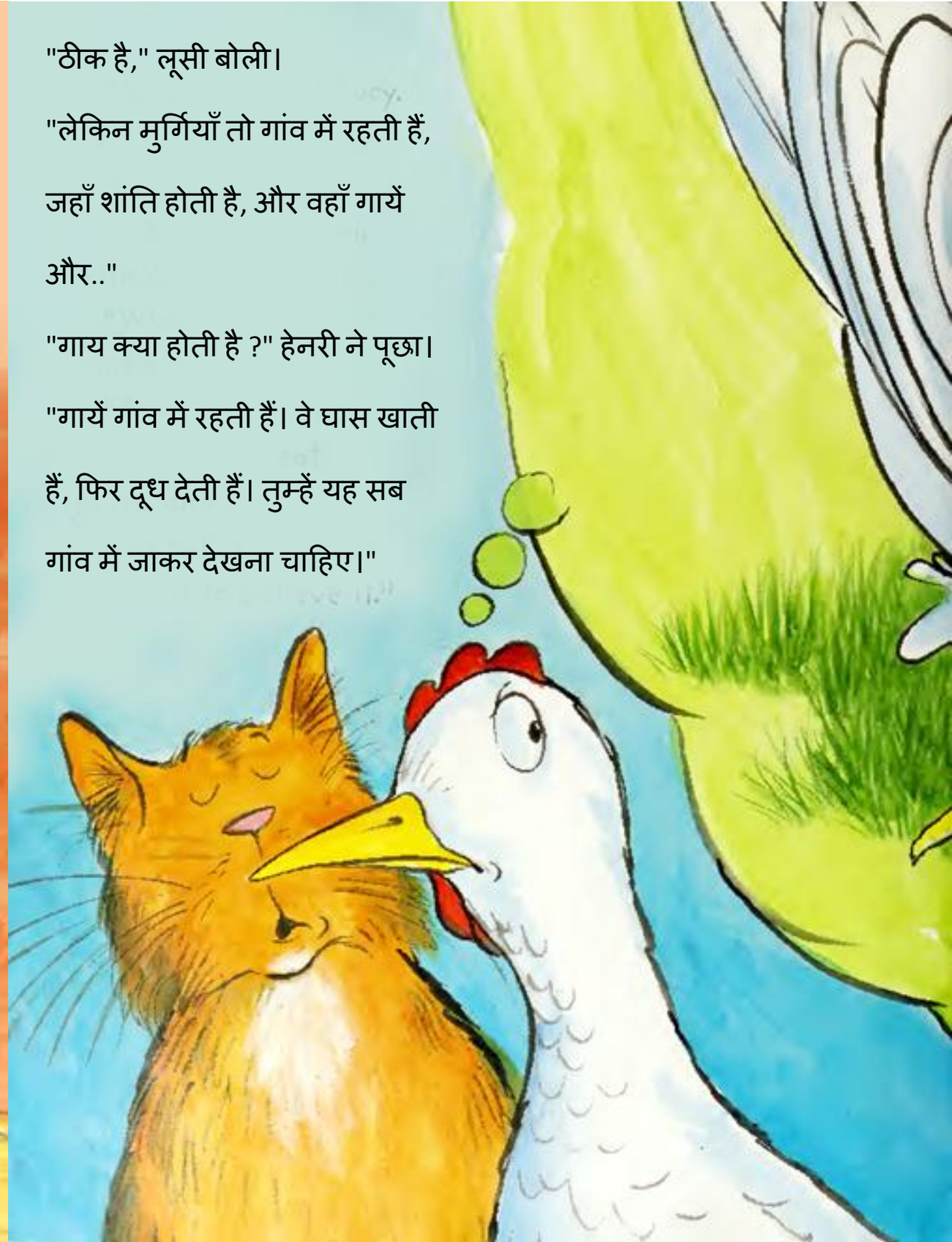

अलेक्स जो कुछ लाया था वो सब हेनरी ने खा लिया- पिज्जा, स्ट्रॉबेरी, तरबूज और रोटी।

"तुम तो घोड़े की तरह खाती हो," लूसी ने हेनरी को कहा।

"मैं एक मुर्गी की तरह खाती हूँ," हेनरी कुड़कुड़ाती हुई बोली। "घोड़ा क्या होता है ?"

लूसी बोली, "घोड़े गांव में रहते हैं। वे बड़े होते हैं और उनका रंग भूरा होता है। वे अपनी पीठ पर इंसानों को बैठने देते हैं। तुम्हें यह सब गांव में जाकर देखना चाहिए।"

हेनरी बगीचे में कीड़े ढूँढ रही थी। बगीचे में जगह-जगह पर घास, पत्थर और गंदगी फैल रखी थी।

"तुम तो सुअर की तरह गंदी हो," लूसी बोली।

"सुअर क्या होता है ?" हेनरी ने पूछा।

लूसी बोली, "सुअर गांव में रहते हैं। उनका रंग गुलाबी होता है और उनकी नाक हरदम कीचड़ में घुसी हुई रहती है। तुम्हें सुअर को देखना चाहिए।"

"बस ! बहुत सुन लिया।" हेनरी बोली। "मैं खुद गांव को देखने जा रही हूँ।" हेनरी अपने घर की छत से छलांग लगाकर गांव की ओर उड़ गई।

हेनरी ज्यादा देर तक उड़ नहीं सकती थी। वह थोड़ी देर तक उड़ी, फिर थक गई। वह आराम करने के लिए एक बड़ी मूर्ति पर बैठी। मूर्ति पर बहुत सारे कबूतर बैठे थे। और उस पर कबूतर की बीट से सफेद धब्बे भी बने हुए थे।
"तुम जैसे अनोखे पक्षी को मैं पहली बार देख रहा हूँ," एक कबूतर बोला।
"मैं एक मुर्गी हूँ," हेनरी ने कहा।
"मैं गांव जा रही हूँ।"

"जिस गति से तुम उड़ रही हो,
इस हिसाब से तुम्हें तो बस पर बैठकर
जाना चाहिए," कबूतर ने कहा।
"बस वहाँ रुकती है।"
"धन्यवाद," हेनरी बोली।
"इसकी कोई आवश्यकता नहीं," कबूतर बोला।
"मैं तो बोल चुकी," हेनरी बोली।

हेनरी छलांग लगाकर बस के चालक के पास खड़ी हो गई।

"सिर्फ खुले छुट्टे ही देना," चालक बोला।

हेनरी के पास छुट्टे पैसे नहीं थे। उसके पास पंख थे। सिक्के डालने की जगह में उसने अपना एक पंख डाल दिया।

"यह कैसी टर्की है," बस में बैठा एक कुत्ता बोला।
"मुर्गी," हेनरी बोली।
"मैं नहीं हूँ," कुत्ता भौंकता हुआ बोला।
"मैं हूँ," हेनरी कुड़कुड़ाती हुई बोली।

बस गांव की ओर रवाना हुई।
"सुनो मुर्गी, गांव जाने के लिए तुम्हें सड़क पार करनी होगी।" कुत्ता बोला।
हेनरी मटकती हुई गांव की ओर चल पड़ी।

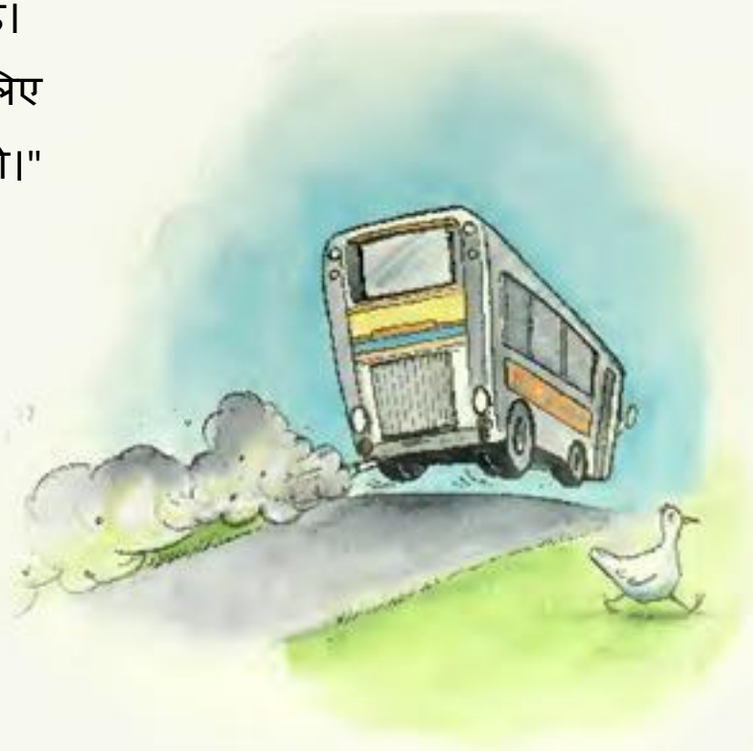

आगे का रास्ता देखने के लिए हेनरी एक छोटी पहाड़ी पर बैठ गई।
"तुम कहाँ जा रही हो," एक चींटी बोली।
"मैं गांव जा रही हूँ," हेनरी बोली।
"मेरे चाचा-चाची गांव में ही रहते हैं," चींटी बोली। " गांव में बहुत सारी चींटियां भी रहती हैं। और बहुत सारी मुर्गियाँ भी।"

"इन दिनों गांव कहाँ है ?" हेनरी ने पूछा।
"जहाँ शहर नहीं है, वहाँ गांव है।" चींटी ने जवाब दिया। "देखो इस ट्रक को, यह तुम्हें गांव ले जाएगा। इस पर तुम्हें कुछ खाने को भी मिल जाएगा।"
ट्रक में पड़ा खाना कूड़े की तरह बदबूदार था।

"हम आ गए," ट्रक के रुकने पर चींटी ने कहा।
"मैंने जितना सोचा था उसे कहीं ज्यादा बड़ा गांव है यह तो," हेनरी बोली।
उसने ट्रक के ऊपर से छलांग लगाई और खेत की ओर आगे बढ़ी।

"हिनननन...", घास चबाता हुआ बड़ा जानवर बोला।
हेनरी को याद आया कि घास तो गायें खाती हैं। "यह कैसी अजीब गाय है," हेनरी बोली।

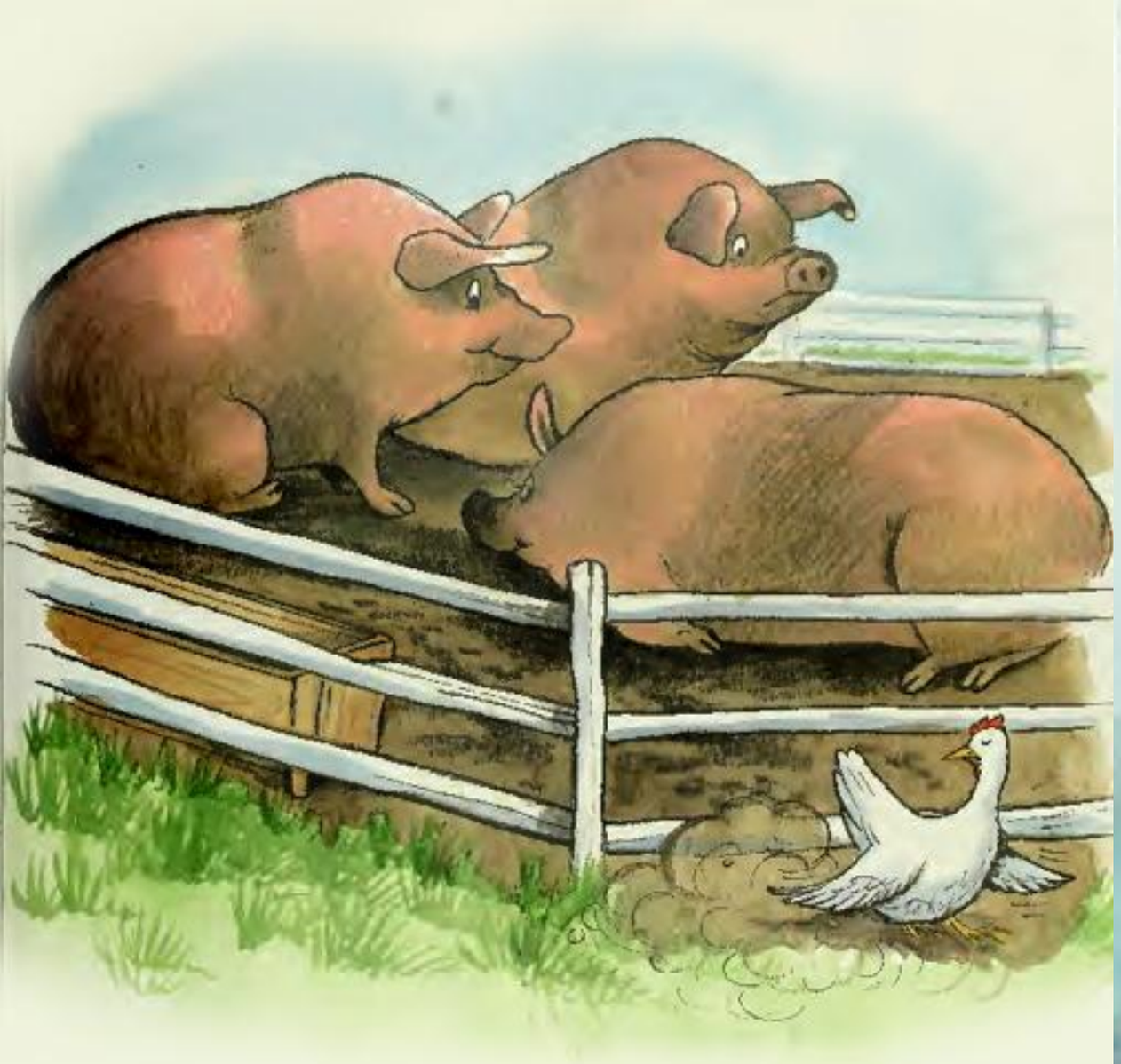

हेनरी ने एक बाड़े में बहुत सारे विशाल जानवरों को देखा। उसे याद आया कि भूरे रंग के बड़े जानवर तो घोड़े होते हैं। "ये घोड़े कीचड़ में लोट क्यों रहे हैं ?" हेनरी ने पूछा। हेनरी खुद ही से बोली, "धूल से अच्छी स्नान होती है।" हेनरी धूल से नहाई और फिर वहाँ से मटकती हुई चल पड़ी।

बारिश शुरू हो गई थी।
एक बड़ी इमारत से हेनरी को 'पेरॉक-पक-पक-पेरॉक' आवाज़ आई।
फिर वह उस इमारत के दरवाज़े की ओर चल दी।

उस इमारत के दरवाज़े वैसे नहीं थे जैसे हेनरी के घर के थे। अलेक्स ने हेनरी के घर के दरवाज़े इस तरह बनाए थे कि एक बार में सिर्फ़ हेनरी ही अंदर जा सकती थी।

दो बड़े दरवाज़े घूमते हुए खुले, और अंदर से एक मशीन फट-फट आवाज़ करती हुई बाहर निकली।

इमारत के अंदर चमकती रोशनी थी और हजारों मुर्गियाँ भी।

हर एक मुर्गी के पास अपना खुद का एक छोटा-सा घर था।

"ऐसा लग रहा है कि मैं मुर्गियों के शहर में आई हूँ," हेनरी ने सोचा।

हेनरी ने एक खाली घर को देखा और उसके अंदर चली गई। "सुनो, मैं हेनरी हूँ। तुम कौन हो ?" हेनरी बोली।
"बतख !" दूसरी मुर्गी बोली।
"मुझे तो लगता है कि तुम एक मुर्गी हो," हेनरी बोली।

मोटरें घूम रही थी, गियरों से खड़खड़ आवाज़ आ रही थी, और जंजीरें झन-झन कर रही थी।
हेनरी उस दूसरी मुर्गी से बोली,"सुनो बतख, तुम्हारे शरीर पर उड़ते हुए मक्के गिर रहे हैं !"
ऊपर मशीन से मक्के की बौछार हो रही थी।

हेनरी ने सोचा कि आखिर कौन उस मुर्गी पर मक्के फेंक रहा था।
"सुनो," हेनरी ने उस इमारत की दूसरी मुर्गियों को कहा।
"पेरॉक-पक-पक, हम अभी बहुत व्यस्त हैं," मुर्गियों ने धीमी आवाज़ में कहा। वे सब अंडे देने में व्यस्त थीं।
सफ़ेद अंडे और भूरे अंडे एक-एक करके किसी दूसरी मशीन से निकल रही चलती हुई पट्टी पर लुढ़क रहे थे।
एक नीले रंग का अंडा भी पट्टी पर लुढ़क गया जो कि हेनरी का था।

यह चलती हुई पट्टी अंडों को मुर्गियों से दूर ले जा रही थी। हेनरी उस पट्टी पर गिर गई। वह चलती पट्टी पर ऊपर-नीचे डोलती रही।

हेनरी को अब बात समझ आने लगी। उसने तय किया, "यह जगह मेरे लिए नहीं है !"

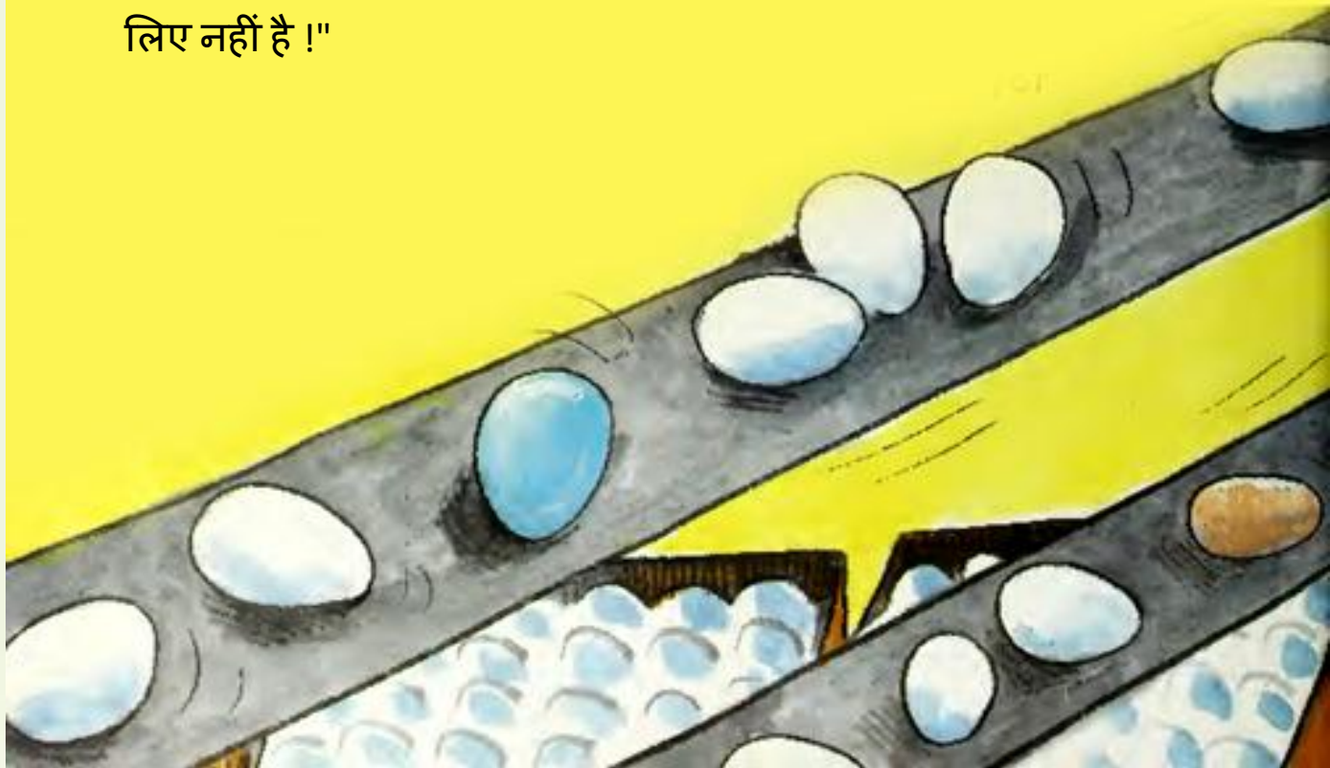

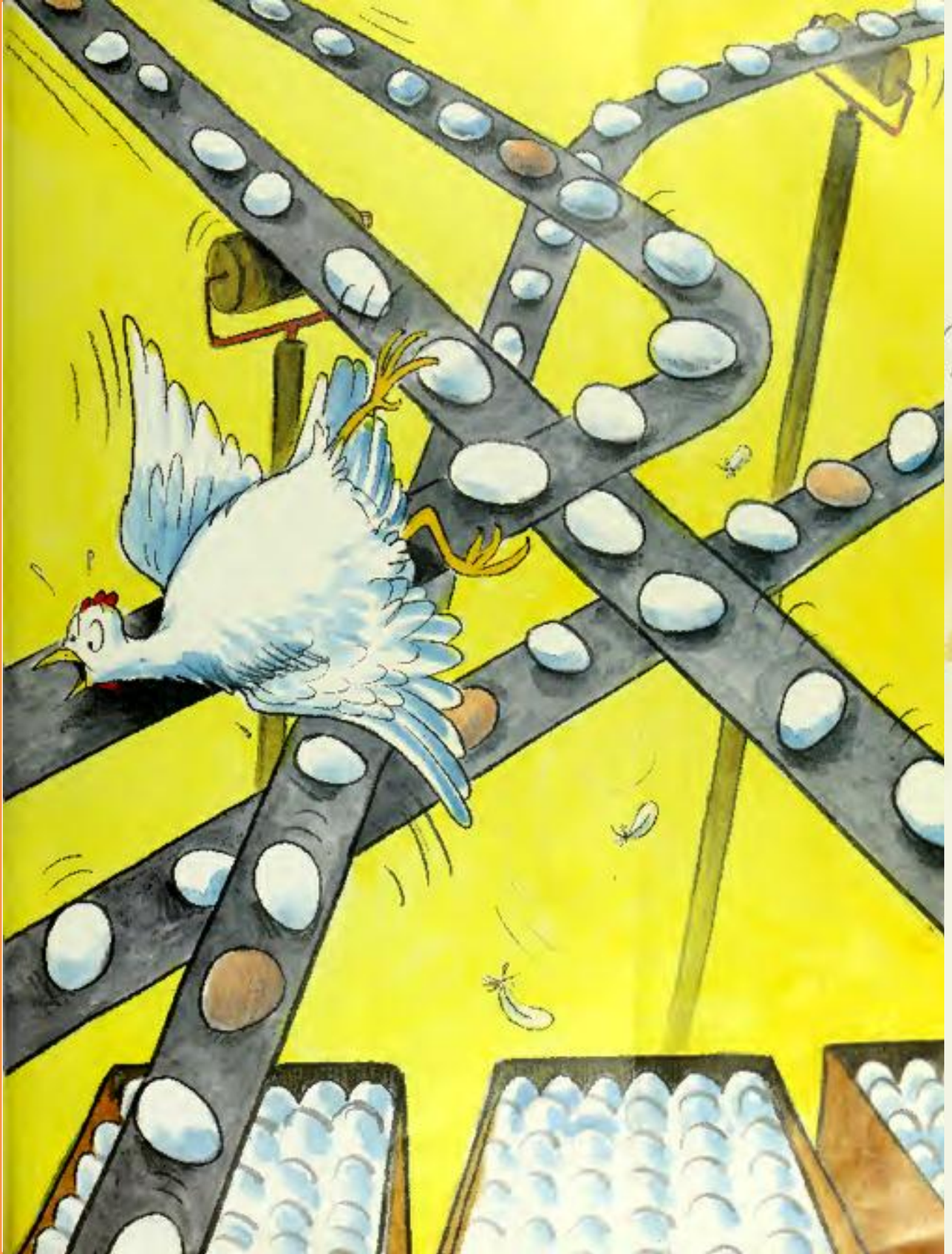

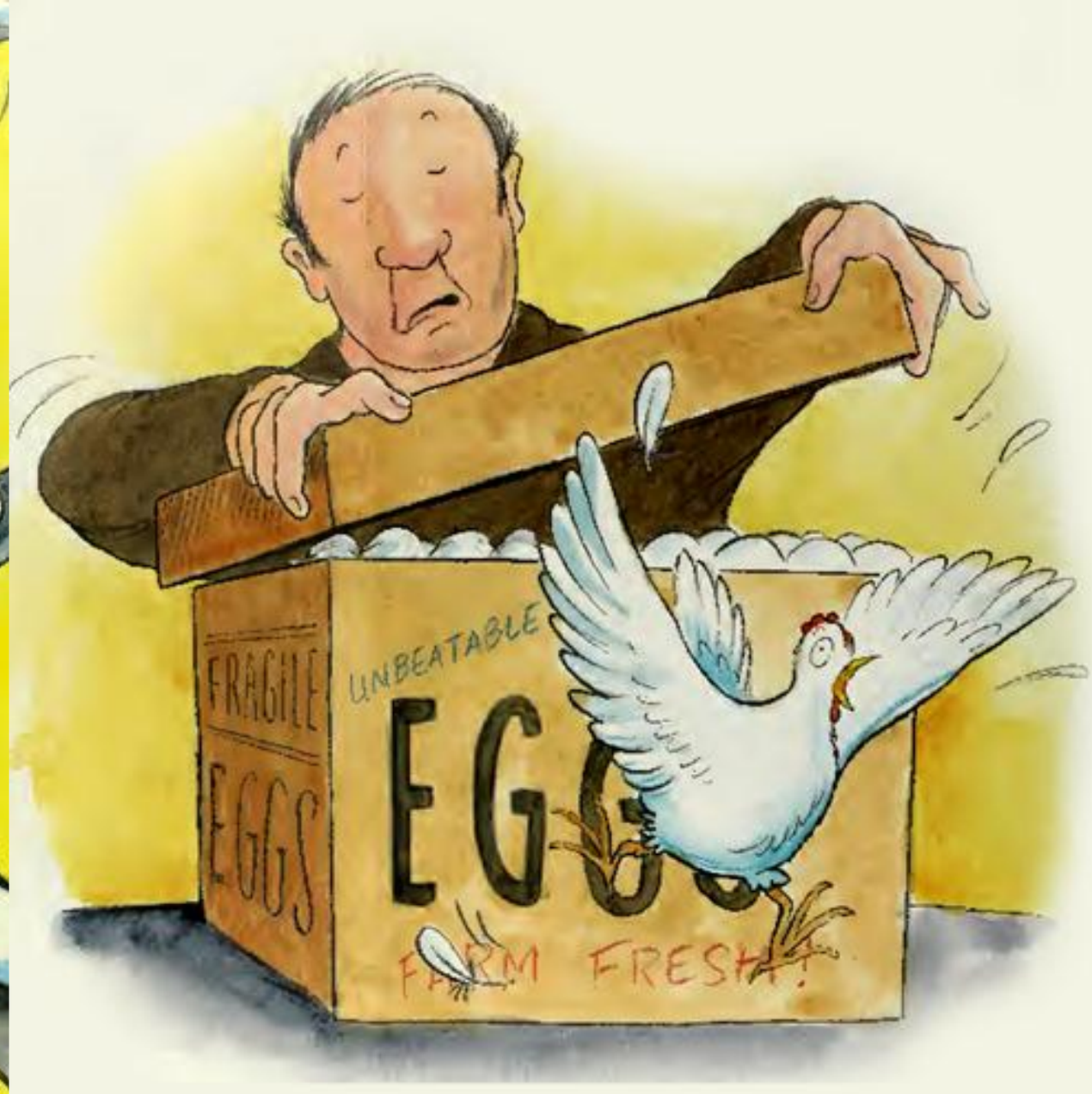

अंडों से भरे डिब्बे के ढक्कन ने हेनरी को लगभग अंदर फँसा ही दिया था। उसे किसी आदमी की आवाज़ सुनाई दी। "यह डिब्बा शहर जाने के लिए तैयार है।"

"मुझे भी इसके साथ शहर की ओर चल देना चाहिए," हेनरी ने सोचा।

उसने ट्रक के अंदर की तरफ छलांग लगाई और डिब्बों के बीच छिप गई।

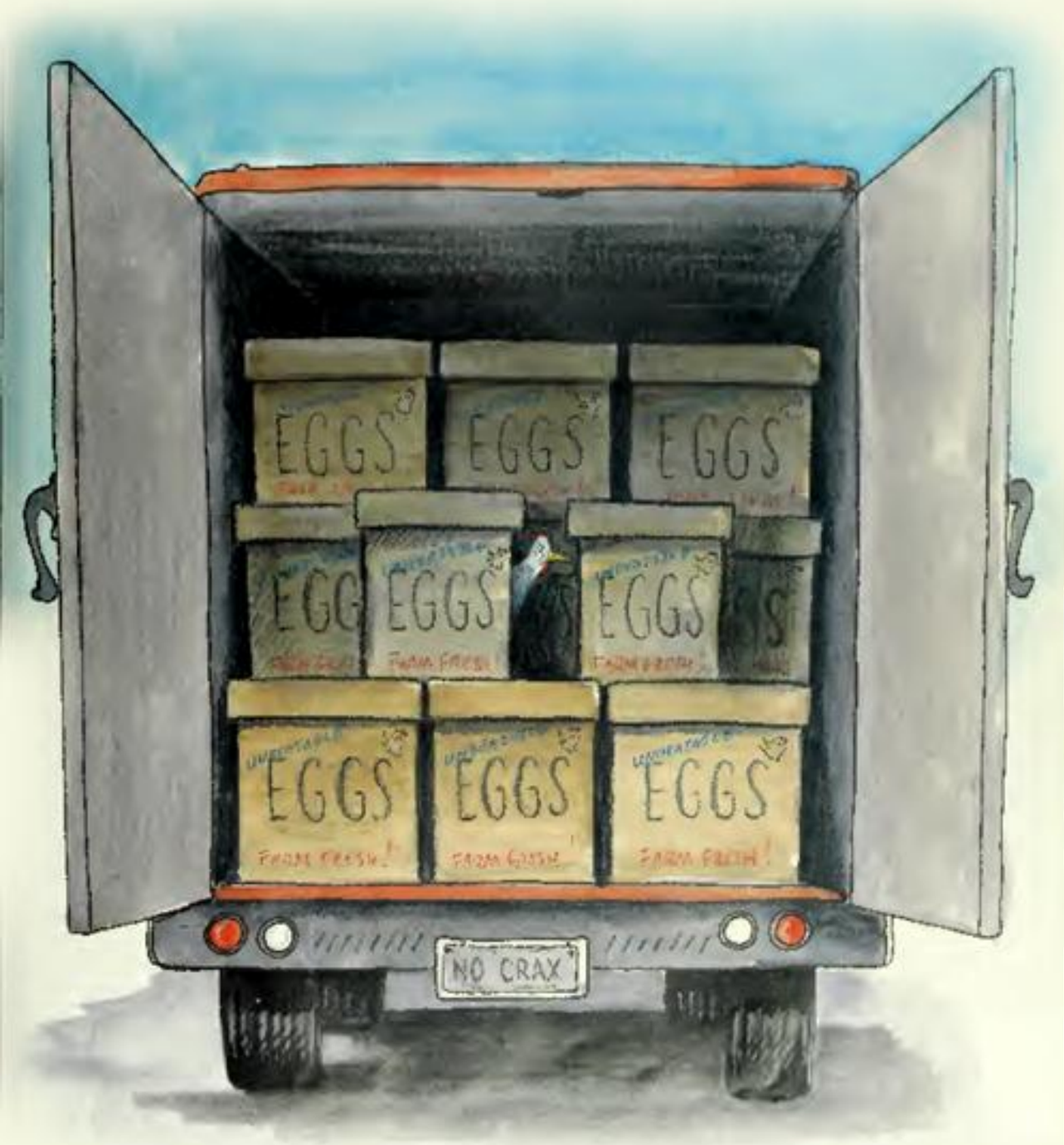

गांव से शहर बहुत दूर था। जब ट्रक रुका, हेनरी फड़फड़ाती हुई बाहर निकली। उसने अपने पंखों को सीधा किया और अपने घर की तरफ उड़ गई।

"वो वापस आ गई !" अलेक्स चिल्लाया।

"अंडे भी आ गए," लूसी बोली।

"पहले मुर्गी आई, फिर अंडे," हेनरी ने कहा।

"क्या गांव वैसा ही था जैसा तुमने सोचा था ?" लूसी ने पूछा।

"वो अलग था," हेनरी बोली। "लेकिन वो जगह मेरे लिए नहीं थी।"

"मुझे एक अच्छी जगह पता है," लूसी ने कहा। "पहली मुर्गी अन्तरिक्ष-यात्रियों के साथ अन्तरिक्ष में जाने वाली है।"

"यह अन्तरिक्ष-यात्री क्या होता है ?" हेनरी ने पूछा।

लूसी बोली, "अन्तरिक्ष-यात्री वो होता है जो रॉकेट में बैठकर अन्तरिक्ष में जाता है। अन्तरिक्ष-यात्री अपने सिर पर बुलबुले पहनते हैं और दूसरे ग्रहों की खोज करते हैं। तुम्हें अन्तरिक्ष में जाकर...."

"लगता है यह अन्तरिक्ष दूसरी दुनिया में है, वहाँ भी मुझे खुद ही को जाना चाहिए," हेनरी बोली।
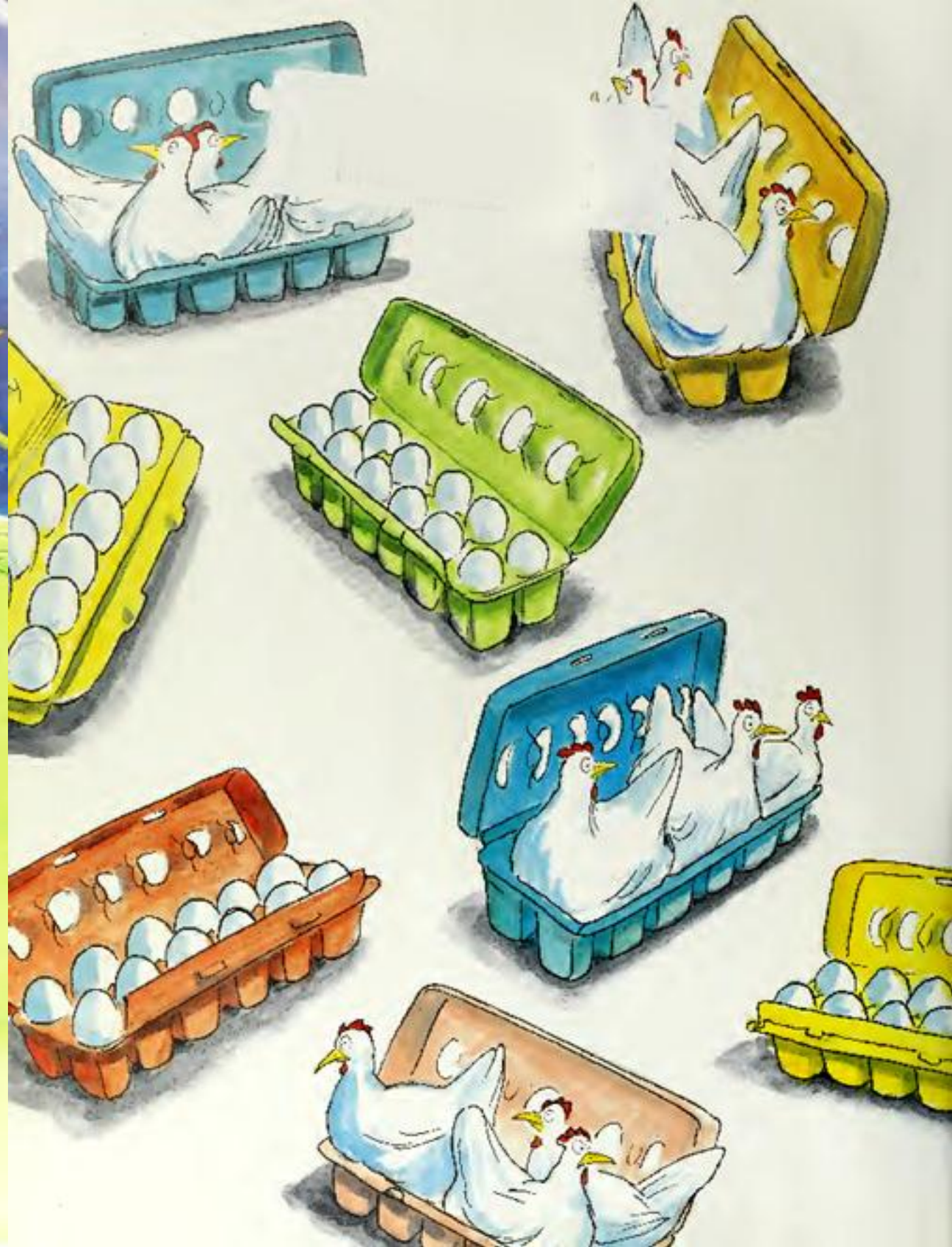
समाप्त